बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १८ जून, २००६)

(समय : सुबह ९:०० से १२:००) | **सत्संग प्रवीण - १** | **कुल प्राप्तांक : १००**

नोंध : दाहिनी ओर दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं।

विभाग-१ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना - प्रथम आवृत्ति, अप्रैल २००३

प्रश्न.१. निम्न में से किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए । (६ गुण)

१. भगवान अक्षरधाम में और पृथ्वी के उपर साकार है । २१

२. एकांतिक भक्त से संबंध होने पर एकांतिक धर्म प्राप्त होता है । ७५-७९

३. निर्विघ्न भक्ति हेतु : ब्रह्मरूप होने की आवश्यकता । १०७

४. श्रीजीमहाराज सर्वोपरी - श्रीमुख कें वचनों । ३९

प्रश्न.२. प्रमाण, सिद्धांत अथवा कडी पर से विषय का शीर्षक दीजिए । (५ गुण)

१. भगवान का स्वरूप ही ऐसा है कि माया में अन्वय होते हुए भी व्यतिरेक ही है । २३

२. और फिर वे वहाँ से कभी भी नही निकल पाते तथा भगवान से कोई ऐश्वर्य भी प्राप्त नहीं करते । १४

३. भगवान का स्वरूप अक्षरधाम सहित पृथ्वी पर विराजमान रहता है, और भगवान के भक्तों को दूसरे लोगों के सामने भी इसी प्रकार वार्ता करनी चाहिए । ११७

४. परमेश्वर तो देश, काल, कर्म और माया की सत्ता को जितना चलने देते हैं, उतनी हद तक ही उनकी गतिविधि रहती है । ७

५. भगवान के स्वरूप का साक्षात् ज्ञान होने पर ही जीव का कल्याण होता है । ७०

प्रश्न.३. निम्न विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) की निशानी करें । (४ गुण)

नोंध : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही की निशानी करी होगी तभी पूर्ण गुण दिये जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. गुणातीत संत की महिमा - प्रसिद्ध संत कवियों के पदों में । ९९

(१) ☐ जेम कोई फूलवाडीना फूल मेली, आकाश फूलनी आशा करे ।

(२) ☐ वाँची कागळ कोई कंथनो, जेम नार अपार राजी थाय ।

(३) ☐ तप तीरथ वैकुंठ पद मेली, मारा हरिजन होय त्यां हुं आवुं रे ।

(४) ☐ मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा, राम से अधिक राम कर दासा ।

२. सद्गुरु गुणातीतानंद स्वामी को 'मूल अक्षर' के रूप में प्रमाणित करते शास्त्र । १२५

(१) ☐ श्रीसत्संगिजीवन ।

(२) ☐ श्रीहरिलीलाकल्पतरु ।

(३) ☐ शिक्षापत्री ।

(४) ☐ कीर्तनकौस्तुभमाला ।

प्रश्न.४. निम्न में से किन्हीं एक का वर्णन करके उसका सिद्धांत लिखें । (४ गुण)

१. वाघा खाचर के प्रश्न का समाधान । १३६

२. ग्रंथियों के मूल का स्वामी द्वारा उच्छेद । १४६

३. वे जहाँ हैं, वहीं मैं हूँ और जहाँ में हूँ, वहीं वे हैं । १३०

प्रश्न.५. किन्हीं दो के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) (८ गुण)

१. जीवनमुक्ता श्रीजीमहाराज । ५८

२. श्रीजीमहाराज की साकार स्वरूप में रुचि । ११

३. अक्षर और पुरुषोत्तम का परस्पर संबंध । ११९

४. ''स्वामी अक्षर है ।'' उनके जीवन और कार्य के आधार पर । (किसी भी दो प्रसंगों को लिखिए ।) १४१

(पृष्ठ पलटिये)

प्रश्न.६. निम्न में से किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें। (बारह पंक्ति में) **(८ गुण)**

१. अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय संसार में एक जीवंत संप्रदाय के रूप में प्रसिद्धि पा रहा है । ६५

२. अक्षरधाम के अतिरिक्त अन्य धाम नाशवान है । ३७

३. यज्ञपुरुषदासजी (शास्त्रीजी महाराज) को अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत की समझ आ गई । १४३

४. जीव जब परमेश्वर की शरण मे जाते हैं, तब वे माया के वशीभूत नहीं रहते । ४७

प्रश्न.७. उपासना में क्या समझना ? और क्या न समझना ? उसके आधार से निम्न विधानों की पूर्ति कीजिए । **(८ गुण)**

(उपासना में क्या समझना ?)

१. पुरुषोत्तम की अन्वय ..... भिन्न भिन्न है । १५६

२. जीव, ईश्वर ..... अनादि तत्त्व हैं । १५५

३. श्रीजीमहाराज सदा ही अपने ..... निर्गुण कर देते हैं । १५५

४. अक्षरब्रह्म एक ही ..... सेवक के रूप में रहता है । १५६

५. पुरुषोत्तम की प्रेरणा ..... स्पष्ट भेद है । १५६

(उपासना में क्या न समझना ?)

१. अकेले पुरुषोत्तम ही हैं ..... नहीं हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए । १५८

२. मुक्तों की आत्मा ..... करती, ऐसा नहीं समझना चाहिए । १५८

३. मुक्त और अक्षरब्रह्म ..... नहीं है, ऐसा नहीं समझना चाहिए । १५८

प्रश्न.८. विस्तृत नोंध लिखिए । **(५ गुण)**

गुणातीत संत के लक्षण । ८९

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ - प्रथम आवृत्ति, नवम्बर २००२ और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज - प्रथम आवृत्ति, नवम्बर २००३

प्रश्न.९. निम्न विधान कौन, किसे और कब कहता है यह लिखिए । **(६ गुण)**

१. ''पेट में ढलना था, उसके बदले वह सीढियों पर लुढक गया ।'' (स.वा.भा.-३) **अथवा** ८३

२. ''मेरा नियम है कि पहले मेरे इष्टदेव भोजन ग्रहण करेंगे तब मैं कर सकता हूँ ।'' (स.वा.भा.-३) ७०

३. ''मेरे मातापिता ने भी ऐसा प्रेम कभी नहीं दिया है।'' (युगविभूति) **अथवा** २३

४. ''उन्होंने मुझे अपने धर्म में ही आस्था रखने को कहा ।'' (युगविभूति) ५७

प्रश्न.१०. निम्न वाक्यों के बारे में कारण लिखिए ।(नौ पंक्ति में) **(६ गुण)**

१. पर्वतभाई ने छः मास तक श्रीजीमहाराज का समागम किया । (स.वा.भा.-३) **अथवा** ७२

२. निष्कुलानंद स्वामी की आत्मनिष्ठा से सबको आश्चर्य हुआ । (स.वा.भा.-३) ४३

३. रिपोर्टर भी स्वामीश्री के उत्तर का सीधा अंग्रेजी अनुवाद अपनी डायरी में दर्ज करने लगा । (युगविभूति) **अथवा** २९

४. नरेन्द्रप्रसाद स्वामी स्वामीश्री के देवत्व में खो गए । (युगविभूति) ४१

प्रश्न.११. निम्न विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए ।(बारह पंक्ति में) **(८ गुण)**

१. ''संत जन सोई सदा.....'' कीर्तन का सार लिखिए । (स.वा.भा.-३) ३१

अथवा

२. निष्कुलानंद स्वामी की काव्यरचना और साहित्यसेवा । (स.वा.भा.-३) ४४

३. स्वामीश्री की भक्तों के प्रति आत्मीयता । (दो प्रसंग) (युगविभूति) २८, ३९

अथवा

४. खुशी से झूम उठे दलुभाई मदारी । (युगविभूति) ३५

प्रश्न.१२. निम्न प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए । **(६ गुण)**

१. कुशलकुंवरबा ने श्रीजीमहाराज की आरती कितनी बार उतारी ? (स.वा.भा.-३) ६३

२. खुशाल भगत ने नभोई गाँव के विद्वान विप्र के पास किन किन का अभ्यास किया ? (स.वा.भा.-३) १

३. मुक्तानंद स्वामी को जहर मिश्रित चंदन की अर्चा करनेवाले को क्या हुआ ? (स.वा.भा.-३) २४

४. बीमार विद्यार्थी को स्वामीश्रीने क्या पिलाया ? (युगविभूति) २८

५. १९८५ मे एक बार स्वामीश्रीने तपते बुखार में कितने दिनों तक लगातार कितने गाँवों का विचरण किया था ? (युगविभूति) १७

६. भोज गाँव के हरिजनों ने मेहमानों से क्या कहा ? (युगविभूति) ५१

प्रश्न.१३. निम्न विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) की निशानी करें । (६ गुण)

नोंध : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही की निशानी की होगी तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. रघुवीरजी महाराज ने हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा कहाँ कहाँ की ? (स.वा.भा.-३) ५५

(१) ☐ गढड़ा । (२) ☐ जूनागढ़ ।

(३) ☐ वरताल । (४) ☐ धोलेरा ।

२. गोपालानंद स्वामी का सामर्थ्य । (स.वा.भा.-३) ६

(१) ☐ बारिश रोक दी ।

(२) ☐ ग्रहण का परिवर्तन किया ।

(३) ☐ हनुमानजी की मूर्ति कांपने लगी ।

(४) ☐ मुमुक्षुओं को गुणातीतानंद स्वामी के पास जूनागढ़ भेजे ।

३. शास्त्रीजी महाराज के हृदय के रतन सम नारायणस्वरूपदासजी । (युगविभूति) १०, ११

(१) ☐ शुद्ध पंच वर्तमान और अनन्य गुरुभक्ति ।

(२) ☐ अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के प्रमुख के रूप में नियुक्त ।

(३) ☐ दिनांक १०-१-१९३९ में भागवती दीक्षा ।

(४) ☐ पादरा में जन्म ।

विभाग-३ : निबंध

प्रश्न.१४. निम्न में से किसी भी <u>एक</u> विषय पर करीब ६० पंक्तियों में निबंध लिखिए। (२० गुण)

१. श्रेय और प्रेय की मार्गदर्शिका - सत्संगप्रवृत्ति ।

२. प्रार्थना और पुरुष प्रयत्न का संगम - प्रमुखस्वामी महाराज ।

३. आदर्श सत्संगी का व्यक्तिगत और कौटुंबिक जीवन ।

नोंध : उपरोक्त सभी प्रश्नों में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न और एक निबंध दिनांक १६ जुलाई, २००६ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावनाएँ हैं ।

प्रति,

परीक्षा व्यवस्थापक (दिनांक १८ जून, २००६. परीक्षा - सत्संग प्रवीण - १. माध्यम - हिन्दी. समय - सुबह ९:०० से १२:००)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किए हुए पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर परीक्षा दी है। निम्नलिखित बातें सही हैं, यह आप की जानकारी के लिए है।

६०१

परीक्षार्थी की अटक : परीक्षा दी वह दिनांक :

परीक्षार्थी का नाम : परीक्षा दी तब का समय :

पिता / पति का नाम : बैठक क्रमांक : ☐☐☐☐☐☐

परीक्षा स्थल का नाम : केंद्र नंबर : ☐☐☐☐

परीक्षार्थी की सही : केंद्र का नाम :

नोंध : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगतों को भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को दे दें। सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहने वाले परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा लें ।